पर्वतीय सूर्य एवं शिवमंदिर जीर्णोद्धार तथा निर्माण समिति, बाँकेधाम के तत्वावधान में आयोजित 'श्री सीताराम महायज्ञ' कार्यक्रम में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(दिनांक–22.02.2017, समय–पूर्वाह्न 11:30 बजे, स्थान–बाँकेधाम, गया)

पर्वतीय सूर्य एवं शिवमंदिर जीर्णोद्धार तथा निर्माण समिति, बाँकेधाम के तत्वावधान में 'श्री सीताराम महायज्ञ' के सुअवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से उपस्थित बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री श्री जीतनराम माँझी जी, पूर्व विधान पार्षद श्री अनुज कुमार सिंह जी, प्रखंड प्रमुख श्रीमती अविता कुमारी जी, मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष श्री अलखदेव प्रसाद यादव जी, महंथ स्वामी रामसुखदास जी, श्री नरेन्द्र सिंह जी, श्री देवशरण सिंह जी, श्री बाबूलाल प्रसाद कुशवाहा जी, श्री रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल जी, श्री राम प्रसाद सिंह जी, श्री आदित्य प्रसाद विश्व जी, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों !!

'श्री सीताराम महायज्ञ' में पहुँचकर मुझे काफी प्रसन्नता हुई है। मित्रों, ऐसे आयोजनों से हमारे भीतर आत्मबल विकसित होता है और सदाचार के पथ पर अग्रसर होने की हमें प्रेरणा मिलती है। पूरे समाज के लोग जब एक साथ एकत्रित होकर हृदय की शुद्धता, भक्ति, नैतिकता और मर्यादा आदि पर महात्माओं और साधु–सन्तों के विचार सुनते हैं, तो उनके भीतर सत्यनिष्ठा, तपस्या, त्याग और बंधुत्व की भावना मजबूत होती है। समाज में मेला, यज्ञ, पर्व, त्योहारों आदि के आयोजन का यही महत्त्व है कि हम सामूहिक रूप से एकत्रित होकर सबके मंगल एवं कल्याण की बातें सुनें, समझें और उसपर चिन्तन–मनन करें।

मित्रों, कोई भी धर्म हो, सभी भाईचारा और प्रेम की ही शिक्षा देते हैं। 'धर्म' वही है जो धारण करने योग्य हो और धारण वही किया जा सकता है, जो समस्त मानवता के लिए

कल्याणकारी हो, मंगलकारी हो। समाज में समता हो, शांति हो, भाईचारा हो, प्रेम हो, सभी एक दूसरे के प्रति सम्मान और आदर का भाव रखें, सभी एक दूसरे के लिए त्याग और सहिष्णुता की भावना रखें –इन्हीं सब बातों से देश की एकता को ताकत मिलती है। कोई भी धर्म हो, सभी हमें अच्छा इंसान बनने की शिक्षा देते हैं। अगर आप हिन्दू हैं तो एक अच्छे हिन्दू के रूप में अपनी पहचान बनायें, अगर आप मुसलमान हैं, तो अच्छे मुसलमान के रूप में अपनी पहचान बनायें। एक अच्छा इंसान बनकर ही आप अच्छा हिन्दू या अच्छा मुसलमान बन सकते हैं। भारत एक ऐसा देश है, जहाँ सभी धर्मों के लोग रहते हैं। सभी धर्मों, सभी जातियों, सभी संस्कृतियों के सुन्दर सम्मिलन से ही भारत की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान और विरासत समृद्ध होती है। 'विविधता के बीच एकता' –हमारे देश की यही विशेषता है। हमारे देश का संविधान भी सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता की मूल अवधारणा पर जोर देता है। 'हमारा संविधान' एक मर्यादा–ग्रन्थ है। इसकी 'प्रस्तावना' में ही वह मंत्र दिया गया है, जिससे अनुशासित और नियंत्रित होकर हम एक गौरवशाली देश के आदर्श नागरिक बन सकते हैं। हमारे देश की 'धर्मनिरपेक्षता' का मतलब यही है कि हम सभी एक दूसरे के धर्मों के प्रति आदर और सम्मान का भाव रखते हैं। तुलसीदास जी ने जब श्रीराम और सीता को अपना आराध्य बनाया, तो उनकी भी यही कामना थी कि–

''सीयराम मय सब जग जानी

करौं प्रनाम जोरि जुग पानी।''

अर्थात् पूरी दुनियाँ को वे 'सीयाराम मय' मानते थे। 'सीयाराम मय' मानने का मतलब –पूरी दुनियाँ को एक समान मानना है –जिसमें न कोई छोटा है, न कोई बड़ा। और अगर कोई समाज के विकास में थोड़ा पिछड़ भी गया है, तो उस

अभिवंचित वर्ग को भी सभी मिलकर आगे बढ़ाने का काम करेंगे, उसके लिए भी त्याग दिखायेंगे। समाज में समता रहेगी, तभी शांति रहेगी, भाईचारा रहेगा, प्रेम रहेगा। इसलिए यज्ञ, मेला, पर्व–त्योहार इन सबके सामूहिक आयोजन का मतलब यही होता है कि सबको विकास के समान अवसर उपलब्ध कराते हुए सबके कल्याण की कामना की जाये। आपके इस यज्ञ–आयोजन का भी यही मूल लक्ष्य है, यही महत्वपूर्ण उद्देश्य है। मैं इस महायज्ञ के सफल आयोजन के लिए पूर्व मुख्यमंत्री श्री जीतनराम माँझी जी सहित यज्ञ–आयोजन समिति के सभी सदस्यों एवं स्थानीय आम जनता को हार्दिक बधाई देता हूँ। मेरी उम्मीद है कि इस आयोजन से इस क्षेत्र में सुख, शांति, भाईचारा, भक्ति और प्रेम का वातावरण विकसित होगा–

''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया''

–सभी सुखी हों, स्वस्थ हों, सबका जीवन समृद्ध और निरापद हो –यही हम सबका प्रयास होना चाहिए। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द !!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।